पुUना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

ihdI p´

pa#-0Ò

rhIm ked0he

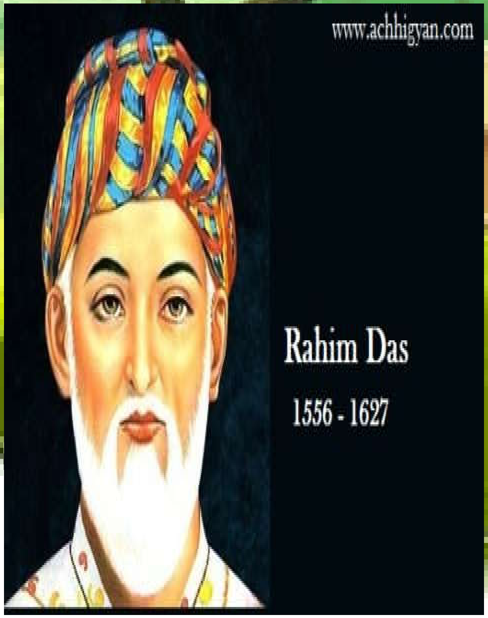

rhIm ka pircy:-

नाम-अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना, (रहीम दास)
जन्म दिनांक-17 दिसम्बर 1556 ई.
जन्म स्थान-लाहौर (अब पाकिस्तान)
कर्म भूमि-दिल्ली (भारत)
पिता का नाम-बैरम खान
माता का नाम-सुल्ताना बेगम
मुख्य रचनाए-रहीम रत्नावली, रहीम विलास, रहिमन विनोद, रहीम ‘कवितावली, रहिमन चंद्रिका, रहिमन शतक,

प्रारंभिक जीवन –

रहीम का पूरा नाम अब्दुल रहीम (अब्दुर्रहीम) ख़ानख़ाना था। आपका जन्म 17 दिसम्बर 1556 को लाहौर (अब पाकिस्तान) में हुआ। रहीम के पिता का नाम बैरम खान तथा माता का नाम सुल्ताना बेगम था, जो एक कवियित्री थी। उनके पिता बैरम ख़ाँ मुगल बादशाह अकबर के संरक्षक थे। कहा जाता है कि रहीम का नामकरण अकबर ने ही किया था।

रहीम को वीरता, राजनीति, राज्य-संचालन, दानशीलता तथा काव्य जैसे अदभुत गुण अपने माता-पिता से विरासत में मिले थे। बचपन से ही रहीम साहित्य प्रेमी और बुद्धिमान थे।

उनके पिता बैरम खान बादशाह अकबर के बेहद करीबी थे। उन्होंने अपनी कुशल नीति से अकबर के राज्य को मजबूत बनाने में पूरा सहयोग दिया। किसी कारणवश बैरम खाँ और अकबर के बीच मतभेद हो गया। अकबर ने बैरम खाँ के विद्रोह को सफलतापूर्वक दबा दिया और अपने उस्ताद की मान एवं लाज रखते हुए उसे हज पर जाने की इच्छा जताई। परिणामस्वरुप बैरम खाँ हज के लिए रवाना हो गये।

रहीम की शिक्षा-दीक्षा अकबर की उदार धर्म- निरपेक्ष नीति के अनुकूल हुई। मुल्ला मुहम्मद अमीन रहीम के शिक्षक थे। इन्होने रहीम को तुर्की, अरबी व फारसी भाषा की शिक्षा व ज्ञान दिया। इन्होनें ही रहीम को छंद रचना, कविता, गणित, तर्कशास्त्र तथा फारसी व्याकरण का ज्ञान भी करवाया। इसके बदाऊनी रहीम के संस्कृत के शिक्षक थे। इसी शिक्षा- दिक्षा के कारण रहीम का काव्य आज भी हिंदूओं के गले का कण्ठहार बना हुआ है।

रहीम के ग्रंथो में रहीम दोहावली या सतसई, बरवै, मदनाष्ठ्क, राग पंचाध्यायी, नगर शोभा, नायिका भेद, श्रृंगार, सोरठा, फुटकर बरवै, फुटकर छंद तथा पद, फुटकर कवितव, सवैये, संस्कृत काव्य प्रसिद्ध हैं।

रहीम ने तुर्की भाषा में लिखी बाबर की आत्मकथा "तुजके बाबरी" का फारसी में अनुवाद किया। "मआसिरे रहीमी" और "आइने अकबरी" में इन्होंने "खानखाना" व रहीम नाम से कविता की है।

रहीम व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था। वे मुसलमान होकर भी कृष्ण भक्त थे। रहीम ने अपने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों को लिया है।

आपने स्वयं को को "रहिमन" कहकर भी सम्बोधित किया है। इनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और श्रृंगार का सुन्दर समावेश मिलता है।

रहीम ने अपने अनुभवों को लिस सरल शैली में अभिव्यक्त किया है वह वास्तव में अदभुत है। आपकी कविताओं, छंदों, दोहों में पूर्वी अवधी, ब्रज भाषा तथा खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। रहीम ने तदभव शब्दों का अधिक प्रयोग किया है।

1-रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय.
टूटे पे रफिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय.

अर्थ: रहीम कहते हैं कि प्रेम का नाता नाज़ुक होता है. इसे झटका देकर तोड़ना उचित नहीं होता. यदि यह प्रेम का धागा एक बार टूट जाता है तो फिर इसे मिलाना कठिन होता है और यदि मिल भी जाए तो टूटे हुए धागों के बीच में गाँठ पड़ जाती है.**2-**
रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय.
सुनी इठलैहैं लोग सब, बांटी न लेंहैं कोय.

अर्थ: रहीम कहते हैं की अपने मन के दुःख को मन के भीतर छिपा कर ही रखना चाहिए। दूसरे का दुःख सुनकर लोग इठला भले ही लें, उसे बाँट कर कम करने वाला कोई नहीं होता.

3-एक साधे सब सधे,सब साधे सब जाए।
माली सीचे मूल को,फूल फल अघाय।

अगर आप एक लक्ष के उपर ध्यान देकर काम करोगे तो फिर आप उसे पा सकोगे, उसकी गहराई तक जा पाओगे।लेकिन अगर आप एक साथ, अलग अलग लक्ष को रखोगे, तो फिर ऐसी स्थिती में आप कोई भी लक्ष के गहराई तक नहीं जा पाओगे। ऐसी आपकी हालात होगी।जब माली जड़ को खाद और पानी डालता है, पौधे की लंबे समय तक देखभाल करता है, तब उस पौधे को बहोत सारे फूल और फल आते है। ठीक उसी तरह से आप अपने लक्ष को पाने के लिये कोशिश करोगे, तब आप अपने लक्ष तक पहोच जाओगे। हर दिन की कोशिश आपको अपने लक्ष के नजदीक लेकर जायेगी। कोई भी सफर पहला कदम उठाने के बाद शुरु होता है, लक्ष को पाने के लिये लगातार कोशिश करना महत्वपूर्ण है।

4-चित्रकूट में रमि रहे, 'रहिमन' अवध-नरेस ।
जा पर बिपदा परत है , सो आवत यहि देस ॥

जब राम को बनवास मिला था तो वे चित्रकूट में रहने गये थे। चित्रकूट घनघोर वन में होने के कारण रहने लायक जगह नहीं थी। ऐसी जगहपर वही रहने जाता है जिस पर कोई भारी विपत्ति आती है।

5-दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।
ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिटि कूदि चढ़ि जाहिं॥

किसी भी दोहे में कम शब्दों में ही बहुत बड़ा अर्थ छिपा होता है। यह वैसे ही होता है जैसे नट की कुंडली होती है। नट अपनी कुंडली में सिमट कर तरह तरह के विस्मयकारी करतब दिखा देता है।

6-धनि रहीम जल पंक को लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय॥

कीचड़ में पाया जाने वाला थोडा सा पानी ही धन्य है क्योंकि उस पानी से कितने छोटे-छोटे जीवों की प्यास बुझती है। सागर का जल विशाल मात्रा में होते हुए भी व्यर्थ होता है क्योंकि उस जल से किसी की प्यास नहीं बुझती।

7-बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥
कोई बात जब एक बार बिगड़ जाती है तो लाख कोशिश के बावजूद उसे ठीक नहीं किया जा सकता। यह वैसे ही है जैसे जब दूध एक बार फट जाये तो फिर उसको मथने से मक्खन नहीं निकलता।
8-रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करै तरवारि॥
किसी बड़ी चीज को देखकर किसी छोटी चीज की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि जहाँ छोटी चीज की जरूरत होती है वहाँ पर बड़ी चीज बेकार हो जाती है। जैसे जहाँ सुई की जरूरत होती है तलवार का कोई काम नहीं होता।
9-रहिमन निज संपति बिन, कौ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सके बचाय॥
जब आपके पास धन नहीं होता है तो कोई भी विपत्ति में आपकी सहायता नहीं करता। यह वैसे ही है जैसे यदि तालाब सूख जाता है तो कमल को सूर्य जैसा प्रतापी भी नहीं बचा पाता है।
10-रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून॥
पानी हमेशा अपने पास रखना चाहिए क्योंकि पानी के बगैर जीवन असंभव है। बिना पानी के न तो मोती बनता है, न चूना और पानी के बिना मनुष्य जीवन भी असंभव है।

pXnoT t r

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता?
उत्तर:- प्रेम आपसी लगाव, निष्ठा, समपर्ण और विश्वास का नाम है। यदि एक बार भी किसी कारणवश इसमें दरार आती है तो प्रेम फिर पहले जैसा नहीं रह पाता है। जिस प्रकार धागा टूटने पर जब उसे जोड़ा जाए तो एक गाँठ पड़ ही जाती है। अत:प्रेम सम्बन्ध बड़ी ही कठिनाई से बनते हैं इसलिए इन्हें जतन से सँभालकर रखना चाहिए।

---

2. हमें अपना दु:ख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है?
उत्तर:- हमें अपना दु:ख दूसरों पर नहीं प्रकट करना चाहिए क्योंकि इससे हम केवल दूसरों के उपहास के पात्र बनते हैं।
अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार हमारे प्रति उपहासपूर्ण और दुख को और बढ़ानेवाला हो जाता है।

---

3. रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य क्यों कहा है?
उत्तर:- सागर पानी से लबालब भरा होने के बावजूद उसके जल को कोई पी नहीं पाता क्योंकि उसका स्वाद खारा होता है। इसके विपरीत पंक के जल को पीकर छोटे जीव-जंतु की प्यास बुझ जाती है। वे तृप्त हो जाते हैं इसलिए रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को उसकी उपयोगिता के करण धन्य कहा है।

---

4. एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?
उत्तर:- कवि रहीम के अनुसार एक ही ईश्वर पर अटूट विश्वास रखने से सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं। जिस प्रकार जड़ को सींचने से हमें फल और फूलों की प्राप्ति हो जाती है उसी प्रकार एक ही ईश्वर को स्मरण करने से हमें सारे सुख प्राप्त हो जाते हैं।

---

5. जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता?
उत्तर:- यद्यपि सूर्य कमल का पोषण करता है परन्तु पानी नहीं होता तो कमल सूख जाता है क्योंकि कमल को पुष्पित होने के लिए जल की अधिक आवश्यकता होती है। अत: कमल की संपत्ति जल है उसके न रहने पर सूर्य भी उसकी सहायता नहीं कर सकता है।

---

6. अवध नरेश को चित्रकूट क्यों जाना पड़ा?
उत्तर:- अवध नरेश को चित्रकूट अपने वनवास के दिनों में जाना पड़ा। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि संकट के समय सभी को ईश्वर की शरण में जाना पड़ता है।

---

7. 'नट' किस कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है?
उत्तर:- 'नट' कुंडली मारने की कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है।

---

8. 'मोती, मानुष, चून' के संदर्भ में पानी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:- 'मोती, मानुष, चून' के संदर्भ में पानी का महत्त्व यह है कि मोती को उसकी चमक पानी से ही प्राप्त होती है। मनुष्य के संदर्भ में पानी का अर्थ उसके मान-सम्मान से है और आटे के संदर्भ में उसे गूंथने और खाने योग्य बनाने से है। इस तरह तीनों का ही पानी के बिना महत्त्व कम हो जाता है।

---

9. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए –

1. टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।
उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि प्रेम सम्बन्धी धागे को यत्नपूर्वक सहेजकर रखना चाहिए। यह धागा यदि एक बार टूट जाए तो अपनी सामान्य स्थिति में नहीं लौट सकता। यदि लौट भी जाए तो उसमें गाँठ हमेशा ही बरक़रार रहेगी।
2. सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।
उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि अपना दुःख अपने तक ही सीमित रखें। उसे सबको बताकर हँसी-मज़ाक का पात्र न बने क्योंकि दूसरे का दुःख कोई बाँटता नहीं है।
3. रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।
उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि फल-फूल पाने के लिए जड़ को ही सींचना चाहिए अर्थात् कवि यहाँ पर एक ही ईश्वर भक्ति की ओर ध्यान देने के लिए कहते हैं।
4. दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।
उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि दोहे में अक्षर कम होने के बावजूद उसमें गूढ़ अर्थ छिपा रहता है। उनका गूढ़ अर्थ ही उनकी गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति को स्पष्ट कर देता है। ठीक वैसे ही जैसे नट कुंडली को समेटकर कूदकर रस्सी पर चढ़ जाता है।
कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि हम जीवन में जो भी कार्य करें उसमें हमें सिद्धहस्त होना चाहिए।
5. नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि मधुर संगीत को सुनकर हिरन अपने प्राण तक न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाता है और मनुष्य किसी कला पर मोहित होकर उसे धन देता है और कल्याण करता है परन्तु जो दूसरों से प्रसन्न होकर भी कुछ नहीं देता, वह नर पशु समान है।
6. जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।
उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि हर-एक छोटी-बड़ी वस्तु का अपना-अपना महत्त्व होता है। जो काम सुई कर सकती है वह काम तलवार नहीं कर सकती है और जो काम तलवार कर सकती है वह कार्य सुई नहीं कर सकती अत: सबकी अपनी-अपनी उपयोगिता होती है और किसी की भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
7. पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।
उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि मोती में चमक न रहे तो वह व्यर्थ हो जाता है, मनुष्य का आत्म-सम्मान न रहे तो उसका जीवन बेकार है और यदि आटे में पानी ना हो तो वह खाने लायक नहीं होता। पानी के बिना ये तीनों ही उबर नहीं सकते हैं।

अशुद्ध	शुद्ध
मोहन मेरा अनुज भाई है।	मोहन मेरा अनुज है।
बेकारी समस्या की दवा हमारे पास है।	बेकारी समस्या का हल हमारे पास है।
इस पुस्तक की यही अच्छाई है।	इस पुस्तक की यही विशेषता है।
राम और मोहन घोर मित्र हैं।	राम और मोहन घनिष्ठ मित्र हैं।
मकड़ी जाला बुनते हुए बना रही है।	मकड़ी जाला बुन रही है।
रौनक, किरण की अनुजा बहन है।	रौनक, किरण की अनुजा है।
इसी कार्य में तुम्हारी अच्छाई है।	इसी कार्य में तुम्हारी भलाई है।
विधवा विलाप करके रोने लगी।	विधवा विलाप करने लगी।
उसके चक्षुओं में दर्द है।	उसकी आँखों में दर्द है।
चूहा कपड़ा कुतरकर फाड़ दिया।	चूहे कपड़े कुतर गया।
रूपवती सुमन बहुत सुंदर हैं।	सुमन रूपवती है।
यह लोगों की दासता गुलामी का परिणाम है।	यह लोगों की दासता का परिणाम है।
महिला अपने चीर धो रही है।	महिला अपने वस्त्र धो रही है।

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
अध्यन	अध्ययन	अर्ध	अर्द्ध
अगम	अगम्य	अगामी	आगामी
अनुगृह	अनुग्रह	अग्यान	अज्ञान
अतिथी	अतिथि	अत्याधिक	अत्यधिक
अंताक्षरी	अंत्याक्षरी	अहल्या	अहिल्या
अध:गति	अधोगति	आवश्यकीय	आवश्यक
अपरान्ह	अपराह्न	इतिहासिक	ऐतिहासिक
ईस्वर	ईश्वर	ऎक्य	ऐक्य
ऎच्छिक	ऐच्छिक	एश्वर्य	ऐश्वर्य
ओद्योगिक	औद्योगिक	ओरत	औरत
उपरोक्त	उपर्युक्त	उपलक्ष	उपलक्ष्य
क्लेस	क्लेश	कारन	कारण
कालीदास	कालिदास	किरन	किरण
मंत्रि	मंत्री	बंधू	बंधु
गाइका	गायिका	ग्रहणी	गृहिणी
ग्यान	ज्ञान	घबड़ाना	घबराना
घुमना	घूमना	चरन	चरण
चाहिये	चाहिए	चांद	चाँद
चिंगारी	चिनगारी	चिड़ीया	चिड़िया
तदंतर	तदनंतर	तत्व	तत्त्व
छिमा	क्षमा	तुफान	तूफान
तोल	तौल	जनम	जन्म
तैय्यार	तैयार	थ्यान	स्थान
जागृत	जाग्रत	जाग्रति	जागृति
दीवाली	दीपावली	दुपहर	दोपहर
दुश्शासन	दु:शासन	धेनू	धेनु
नयी	नई	नर्क	नरक
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]